

डॉ. नॉट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 16, नीतिवचन 28-29

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या 16, नीतिवचन अध्याय 28 और 29 है।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर व्याख्यान 16 में आपका स्वागत है।

पिछले व्याख्यान की तरह, हम अभी भी पुस्तक के अध्याय 25 से 29 के संग्रह संख्या 5 को देख रहे हैं, जो, जैसा कि अधिकांश लोग सहमत हैं, एक विशेष तरीके से नेताओं को संबोधित है, समाज में नवोदित नेताओं को, उन्हें सक्षम प्रतिनिधि बनाने में मदद करता है। नेता, उनके समुदाय के समर्थक। यहां मैं विशेष रूप से दो भिन्न पुनरावृत्तियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं, जो दोनों अध्याय 28 में दिखाई देते हैं, अर्थात् श्लोक 12 और श्लोक 28, और फिर उनकी तुलना कुछ अन्य दिलचस्प संबंधित कथावतों से करते हैं, दो अध्याय 29 में और एक अध्याय 11 में। मुझे पढ़ने दो श्लोक 12 और 28.

जब धर्मी आनन्दित होते हैं, तो बड़ी महिमा होती है। परन्तु जब दुष्ट लोग उठते हैं, तो लोग छिप जाते हैं। जब दुष्ट लोग उठते हैं, तो लोग छिप जाते हैं।

परन्तु जब वे नाश होते हैं, तो धर्मी बढ़ते हैं। फिर, इन छंदों को जल्दी से पढ़ना और सोचना आसान होगा, ओह हाँ, ठीक है, यह समझ में आता है, सीधा, स्पष्ट, आगे उल्लेख करने या इस पर विचार करने लायक नहीं है। यह सब सीधा-सादा लगता है।

लेकिन अगले कुछ मिनटों में सबसे पहले मैं जो करना चाहता हूं वह है कि हमें फिर से समानता के विवरण और बारीकियों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करना है और फिर कल्पनाशील रूप से यह बताना शुरू करना है कि इन कथावतों को उनके पूरे मूल्य के साथ कैसे पढ़ा जा सकता है। श्लोक 28 में, पारंपरिक प्रतिमान ने इस श्लोक को विरोधाभासी समानता के रूप में वर्णित किया होगा। इससे यह उम्मीद जगी होगी कि पहली आधी पंक्ति के प्रत्येक शब्द का दूसरी छमाही में एक अर्थपूर्ण प्रतिरूप होगा।

पर ये स्थिति नहीं है। संबंधित तत्वों को अब फिर से अनुवाद में सुनें, बिल्कुल शाब्दिक अनुवाद। आनन्द में, उत्थान में, धर्मी, दुष्ट, महान महिमा, लोग छिप जाते हैं।

बेशक, धर्मी और दुष्ट शब्द, प्राचीन इज़राइल की बुद्धिमान सोच में अच्छे और बुरे लोगों के लिए मानक विपरीत पदवी हैं। और जब अलगाव में विचार किया जाता है, तो आनन्दित और उत्थान में अभिव्यक्तियाँ, अर्थ की दृष्टि से अर्थ में समतुल्य या समान भी नहीं हैं। हालाँकि, यह अभिव्यक्ति, जब धर्मी लोग आनन्दित होते हैं, उन भावनाओं की कल्पना करते हैं जो एक न्यायपूर्ण समाज में धर्मी लोगों की भलाई और उच्च सामाजिक स्थिति के साथ होंगी।

और इसलिए, धर्मी का उत्साह विपरीत दूसरे आधे श्लोक में वर्णित दुष्टों के उत्थान के बराबर एक रूपक है। जिन भावों की महान महिमा है और जिन्हें लोग छिपाते हैं, वे भी पूरी तरह से असंबंधित लगते हैं। लेकिन फिर भी, रूपक अनुरूपताएं हैं।

महान महिमा की अभिव्यक्ति, एक न्यायपूर्ण समाज के वर्णन के साथ, न्याय और खुशी के खुले उत्सव की कल्पना करती है जो एक उत्पीड़ित समाज की मुक्ति के साथ हो सकती है। इसके विपरीत, यदि दुष्ट लोग नियंत्रण में हैं, तो आम जनता डर जाएगी और नुकसान के रास्ते से दूर रहने की कोशिश करेगी। नतीजतन, दोनों अभिव्यक्तियाँ इस आचरण के विभिन्न पहलुओं, अर्थात् क्रिया के विपरीत, संबंधित भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करके व्यवहार के विपरीत पैटर्न का वर्णन करती हैं।

अब हम श्लोक 28 और उसमें समानता को देखते हैं। जब दुष्ट उठते हैं, जब वे नष्ट हो जाते हैं, छिप जाते हैं, बढ़ जाते हैं, लोग, धर्मी। इस कविता में पत्राचार, फिर से, वैसा नहीं है जैसा वे दिखाई देते हैं।

यदि कविता को एक विरोधाभासी समानता के रूप में देखा जाता है, तो पारंपरिक लेबल जो लागू किया गया होगा, कोई उम्मीद करेगा कि कुछ शब्द एंटोनिम्स होंगे और शायद एक तत्व पर्यायवाची होगा। फिर भी ऐसा नहीं है। मैं इस कविता में समानता के निम्नलिखित तीन पहलुओं पर प्रकाश डालना चाहता हूँ।

सबसे पहले, पत्राचार के पहले सेट में वाक्यांश सटीक विपरीत नहीं हैं। वे स्पष्ट रूप से एक-दूसरे से भिन्न हैं, लेकिन दुष्टों के उत्थान के विपरीत उनका पतन होगा, न कि उनकी मृत्यु। वे नष्ट हो जाते हैं।

दूसरा, दूसरे सेट की स्थिति भी ऐसी ही है। हालाँकि किसी प्रकार का विरोधाभास है, वृद्धि का विपरीत कम या कम होगा, छिपना नहीं। इसके विपरीत छिपाव का विपरीत उभरेगा या खुले में आएगा, बढ़ेगा नहीं।

तीसरा, जिस तरह से समानता स्थापित की जाती है, उससे संबंधित शब्दों के तीसरे सेट के शब्द किसी तरह से मेल खाते हैं, लेकिन वे पर्यायवाची नहीं हैं। सभी लोग धर्मी नहीं हैं। इसके अलावा, यह उल्लेखनीय है कि ज़ादिकिम, धर्मी, का प्राकृतिक अर्थपूर्ण एंटोनिम या एंटीथिसिस दुष्ट है, यह कविता में पहला शब्द है, एडम नहीं, लोग, वह शब्द जिसके साथ यह यहां समानता रखता है।

मैं इस पर इतने विस्तार में क्यों जा रहा हूँ? खैर, इन विचारों का वास्तव में कहावत की व्याख्या के लिए व्यापक परिणाम हैं, जो पहली नज़र में दिखने से कहीं अधिक सूक्ष्म है। इसे स्पष्ट करने के लिए, आइए अब मैं रोलैंड मर्फी की टिप्पणी में इस कविता की व्याख्या पर कुछ विस्तार से नज़र डालूँ, जो, वैसे, पारंपरिक व्याख्या का प्रतिनिधि है। वह कहते हैं, मैं उद्धृत करता हूँ, दुष्ट अधिकारियों से नुकसान से बचने के लिए व्यक्ति छिप जाता है, लेकिन दुष्टों के पतन के साथ ही लोग खुले में आ जाते हैं।

वे अनेक हैं अर्थात् उभरते हैं और उन्नति करते हैं। वे अब कुछ शक्तिशाली पदों पर हैं। सबसे पहले, मैं यहां इस बात पर प्रकाश डालना चाहता हूँ कि इस प्रकार की व्याख्या वास्तव में इन कहावतों के बारे में हमारी प्रारंभिक धारणा की पुष्टि करती है कि, ठीक है, वे सिर्फ विपरीत कह रहे हैं, वे स्पष्ट कह रहे हैं।

और मर्फी की व्याख्या वास्तव में इसकी इतनी अधिक व्याख्या नहीं है, बल्कि इस कहावत के स्पष्ट रूप से स्पष्ट अर्थ और कथनों का थोड़ा अधिक विस्तृत पुनर्लेखन है। विशेष रूप से त्रिविध चमक पर ध्यान दें, खुले में आएँ, वाक्यांशों के माध्यम से, वे कई हैं, यानी वे उभरते हैं और समृद्ध होते हैं। वे अब कुछ शक्तिशाली पदों पर हैं।

यह संक्षिप्त पैराग्राफ कम से कम पांच व्याख्यात्मक निर्णयों को दर्ज करता है, जिनमें से तीन सख्त समानता के प्रतिमान के आधार पर पारंपरिक व्याख्या के सभी लक्षण दर्शाते हैं। सबसे पहले, अभिव्यक्ति दुष्ट अधिकारी उस वाक्यांश की व्याख्या करते हैं जो शाब्दिक रूप से कहता है कि दुष्ट कब उठते हैं। दूसरे, जिस वाक्यांश में कोई छुप जाता है वह उस शाब्दिक अभिव्यक्ति की व्याख्या करता है जिसे मानवता छुपाती है।

ये दोनों व्याख्याएँ निर्विवाद हैं। हालाँकि, इसके विपरीत, मेरी राय में, शेष तीन व्याख्यात्मक निर्णय कम प्रेरक हैं। तो, तीसरा, दुष्टों के नष्ट होने का वाक्यांश अब उनके नष्ट होने पर चरितार्थ होता है।

निःसंदेह, यह पूरी तरह से विरोधाभासी समानता के पारंपरिक विश्लेषण और सख्त या सटीक समानता के विचार के अनुरूप है। हालाँकि, पतन के दौरान, दुष्टों का पतन स्पष्ट रूप से उनके उत्थान के विपरीत है, समानांतर स्लॉट में अवधारणा, अभिव्यक्ति का अर्थ नहीं है। जब वे नष्ट हो जाते हैं तो अभिव्यक्ति का तात्पर्य स्पष्ट रूप से शक्ति से उत्थान, शक्ति का पतन नहीं, बल्कि दुष्टों की मृत्यु है।

चौथा, मर्फी का वाक्यांश, जस्ट कम इन द ओपन, हिब्रू शब्द की पुनर्व्याख्या है, वे बढ़ते हैं, क्योंकि वे बढ़ते हैं। मर्फी ने अपनी पहली अभिव्यक्ति से जिन वास्तविक अर्थों को स्वीकार किया है, वे अनेक हैं। यह भी ध्यान दें कि खुले में आना वाक्यांश की इसके अनुमानित एंटोनिम, छिपाना के प्रकाश में एक जानबूझकर व्याख्या है।

जबकि मर्फी इन दो विशेष वस्तुओं को समानांतर के रूप में सही ढंग से जोड़ता है, समस्या यह है कि वह उन्हें सटीक विलोम के रूप में देखने के लिए बाध्य महसूस करता है। इस मूल्यांकन की पुष्टि दूसरी चमक से होती है, चमक, वे उभरते हैं और समृद्ध होते हैं, यह हिब्रू शब्द के शाब्दिक अर्थ को मर्फी की पुनर्व्याख्या के साथ संयोजित करने का एक प्रयास है। उभरने वाले शब्द के लिए खुले में आने के लिए एक चमक है और समृद्धि मूल की शब्दार्थ सीमा के भीतर वृद्धि या संख्या के भीतर है।

और फिर अंत में, जिज्ञासु तीसरी चमक, वे अब कुछ शक्ति की स्थिति में हैं, अप्रत्याशित है, मर्फी के एडम, मनुष्य और मानवता के साथ धर्मी के प्रारंभिक सहसंबंध को देखते हुए, अभिव्यक्ति में, वे छिप जाते हैं। फिर किस बात ने उन्हें इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि धर्मी लोग अब सत्ता की

स्थिति में हैं? एक प्रभाव तात्कालिक संदर्भ हो सकता है, विशेष रूप से निम्नलिखित अध्याय, 29.2 में श्लोक 22, और अगले अध्याय, 29.16 में श्लोक 16, और हम कुछ मिनटों में इन छंदों को देखेंगे। इसके अलावा, पारंपरिक प्रतिमान भविष्यवाणी करता है कि हिब्रू समानता में समानांतर स्लॉट या तो पर्यायवाची या विलोम हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि मर्फी ने इन पूर्वधारणाओं से उलटा निष्कर्ष निकाला है। चूंकि धर्मी का स्वाभाविक विलोम शब्द दुष्ट है, इसलिए उन्हें समानांतर होना चाहिए। चूंकि विरोधी समानता के पहले भाग में दुष्ट अधिक शक्तिशाली थे, मर्फी ने निष्कर्ष निकाला कि दुष्टों द्वारा समाज में अपना गढ़ खो देने के बाद धर्मी शक्तिशाली हो जाएंगे।

सटीक समानता के पुराने प्रतिमान ने उनकी व्याख्या पर एक शक्तिशाली, यदि संभवतः अचेतन, प्रभाव डाला है। मैं अभी जो कुछ कह रहा हूँ, उसमें मेरे तर्क पर संभावित आपत्ति हो सकती है। अक्सर यह धारणा बनाई जाती है कि हिब्रू क्रिया रबाह के दोनों अर्थ होते हैं, अर्थात् बढ़ना और शक्तिशाली बनना।

कोई यह तर्क दे सकता है कि मर्फी ने क्रिया की व्याख्या उसके स्वीकृत अर्थों के आधार पर की है। हालाँकि, मुझे अगले कुछ मिनटों में यह दिखाने की उम्मीद है कि ऐसा बिल्कुल नहीं है। मेरे तर्क के निष्कर्ष की आशा करने के लिए, जो वैसे काफी लंबा और बहुत, बहुत विस्तृत होगा, जिन शाब्दिक निर्णयों पर हिब्रू क्रिया रबाह के इस कथित दोहरे अर्थ की पहचान आधारित है, वे वास्तव में पहले से प्राप्त तरीकों पर निर्भर हैं सबसे पहले सटीक समानता के सिद्धांत से।

नतीजतन, मर्फी की रबाह की व्याख्या का मतलब शक्तिशाली होना भी है, यह किसी भी तरह से सिद्धांत पर आधारित है, चाहे क्रिया के अनुमानित अर्थ पर या इस कविता में धर्मी और दुष्टों के अनुमानित विरोधाभास पर। निम्नलिखित में, अब मैं विश्लेषण के सिद्धांतों के आधार पर श्लोक 28 की अपनी व्याख्या प्रस्तुत करूँगा और उसका बचाव करूँगा, जिसकी मैं इस व्याख्यान श्रृंखला में वकालत करता रहा हूँ। और जबकि अब आगे जो कुछ भी होगा उसमें बहुत अधिक विवरण होगा, मुझे आशा है कि एक मेहनती कल्पनाशील व्याख्या के साथ कितना कुछ हासिल किया जा सकता है जो वास्तव में समानता और रूपक के महत्व के बारे में अधिक व्यापक दृष्टिकोण लेता है।

अब फिर से, मर्फी की समझ के साथ तुलना में आसानी के लिए, मैं अब उनके विचार को यहां संक्षेप में प्रस्तुत करूँगा। जब अपराधी समाज में महत्वपूर्ण प्रभाव प्राप्त कर लेंगे, तो बहुत से लोग सार्वजनिक जीवन से हट जायेंगे। हालाँकि, जब ऐसे अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा, तो आबादी का बढ़ता प्रतिशत उच्च नैतिक मूल्यों और व्यवहार को अपनाएगा।

अब, यहां उनके वाक्यांश पर कुछ टिप्पणियाँ हैं, वाक्यांश पर, कई लोग सार्वजनिक जीवन से हट जाएंगे। जबकि हिब्रू में लोग शब्द सामान्य रूप से लोगों के लिए एक सामूहिक शब्द है, एडम शब्द का मतलब यह नहीं है कि यह शब्द नियमित रूप से होता है और यहां सभी को संदर्भित करता है। व्यवहार में, हमेशा ऐसे लोग होंगे जो सत्ता और सफलता के प्रति आकर्षित महसूस

करते हैं, ऐसे लोग जो स्वयं को समायोजित कर लेंगे या जो दुष्टों के साथ सेना में शामिल हो जाएंगे।

हालाँकि, अन्य लोग वास्तव में संभावित दुरुपयोग और या शोषण से डरेंगे। संपत्ति या आशावादी खुशी का खुला प्रदर्शन टाला जाएगा। अन्याय के प्रति जनता का विरोध दुर्लभ होगा।

अब, मैं मर्फी के सारांश में वाक्यांश पर कुछ टिप्पणियाँ करता हूँ, जब ऐसे अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाता है, तो सजा की गंभीरता, वे नष्ट हो जाएंगे, इन दुष्टों द्वारा किए गए अपराधों की गंभीर प्रकृति और खतरे की सीमा को दर्शाता है। उन्होंने समाज के सामने पोज़ दिया है। उन्हें सिर्फ सज़ा नहीं दी जाती, मार दिया जाता है। दुष्ट केवल वे लोग नहीं हैं जो सामान्य अर्थों में पूर्ण से कमतर हैं।

वे सामान्य आबादी में जो डर पैदा करते हैं, उससे पता चलता है कि यहां शब्द वास्तव में खतरनाक लोगों को संदर्भित करता है जिनके पास शोषण, जबरदस्ती और हिंसा के माध्यम से समाज पर अपने स्वार्थी लक्ष्यों को थोपने की इच्छा और साधन दोनों हैं। यहाँ के दुष्ट कठोर अपराधी हैं। अब, मैं मर्फी के इस कथन पर कुछ टिप्पणियाँ करता हूँ कि वे धर्मियों के संबंध में उच्च नैतिक मूल्यों और व्यवहार को अपनाएँगे।

धर्म पदवी केवल उन लोगों का सामान्यीकृत लक्षण वर्णन नहीं है जो किसी अनिश्चित तरीके से अच्छे माने जाते हैं। बल्कि, मेरा मानना है कि यह शब्द चरित्रवान और सदाचारी लोगों को संदर्भित करता है जो सक्रिय रूप से समाज की भलाई चाहते हैं। और मैंने यह मामला पिछले व्याख्यान में ही बनाया था जब हमने नीतिवचन 25 श्लोक 28 को देखा था।

धर्म लोग दूसरों के लिए आशीर्वाद का स्रोत हैं, जिन्हें दुष्टों के सामने झुकना नहीं चाहिए। ये वे धर्म हैं जिनके बारे में हम यहां बात कर रहे हैं। फिर, मर्फी के बयान पर जनसंख्या का बढ़ता प्रतिशत भी कुछ टिप्पणियाँ।

यह वाक्यांश, मर्फी के लिए, जनसंख्या का बढ़ता प्रतिशत, हिब्रू क्रिया रबाह को बढ़ाने के लिए संक्षिप्त करता है। अब, इस बात पर आम सहमति है कि इस क्रिया का अर्थ कभी-कभी बढ़ाना या शक्तिशाली बनना होता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, पुराने नियम के मानक हिब्रू-अंग्रेजी शब्दकोश, हिब्रू और अरामी लेक्सिकन में प्रासंगिक लेख।

लेकिन अगर ऐसा था तो फिर बढ़ती क्यों दोहराई गई? अब, इस दावे का समर्थन करने के लिए सूचीबद्ध संदर्भ कम हैं। उत्पत्ति 7, 17-18, दानियेल 12, 4, नीतिवचन 28, 28, नीतिवचन 29, 2, और नीतिवचन 29, 16। यह कुल मिलाकर छह छंद हैं जिनमें मर्फी और हाल्लोट और कई अन्य कह रहे हैं कि रबाह का मतलब सिर्फ यह नहीं है संख्या में वृद्धि का अर्थ शक्तिशाली बनना भी है।

इन छह में से, पहले तीन प्रेरक नहीं हैं और अर्थ को शक्तिशाली बनाने के समर्थन के रूप में इन्हें खारिज किया जा सकता है। पहली उत्पत्ति 7, 17-18 में क्रियाएं हैं, जिनमें रबाह के विषय के रूप में पानी है। तो, पानी शक्तिशाली हो रहा है।

वास्तव में, श्लोक 18 में, जल शक्तिशाली हो गया और पृथ्वी पर बहुत बढ़ गया। इस प्रकार, जल के शक्तिशाली होने की बात करें। लेकिन इसे क्रिया के ρ रूप गबर, गिबर के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

क्रिया रबाह का सामान्य अर्थ है, बढ़ाना। इसी तरह, डैनियल 12, श्लोक 4 में क्रिया रबाह के विषय के रूप में ज्ञान है। मेरे द्वारा देखे गए प्रत्येक बाइबिल अनुवाद में क्रिया का सामान्य अर्थ होता है।

यहां तक कि जो लोग ज्ञान के लिए शब्द में संशोधन करते हैं, जैसे कि एनआरएसवी, ऐसे कई लोग आगे-पीछे भागते रहेंगे, और बुराई बढ़ेगी। रबाह का सामान्य अर्थ शक्ति में वृद्धि के बजाय संख्या में वृद्धि करना है। इसलिए, जैसा कि मैंने अभी विस्तार से बताया, इनमें से पहले तीन प्रेरक नहीं हैं।

इसके बाद हमारे पास केवल तीन संदर्भ रह जाते हैं, अर्थात् हमारा संस्करण 28-28 और फिर नीतिवचन में दो निकट से संबंधित 29-2 और 29-16। अब अगले कुछ मिनटों में, मैं यह जांचने के लिए इन तीन छंदों का कुछ विस्तार से विश्लेषण करूंगा कि क्या 29:2, 29:16, और 22:28 वास्तव में अर्थ निर्दिष्ट करने के मामले का समर्थन करते हैं जो यहां क्रिया को शक्तिशाली बनाता है। चूंकि नीतिवचनों का वर्तमान समूह अंतिम संस्करण सेट है जिसकी मैंने यहां अपनी पुस्तक में जांच की है, मैंने जो किया है वह यह है कि मैंने कुछ प्रमुख विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं का परीक्षण किया है जो हाल के वर्षों में समानता पर मेरे काम से उत्पन्न हुई हैं।

विशेष रूप से, मैं सटीक समानता के कठोर अनुप्रयोग के आधार पर हिब्रू शब्दों को विशिष्ट शाब्दिक अर्थ निर्दिष्ट करने की प्रक्रिया पर सवाल उठाना चाहता हूं। क्या आप देख रहे हैं कि मैं क्या कर रहा हूँ? इन शेष तीन संदर्भों से क्या पता चलता है कि रबाह का अर्थ शक्तिशाली बनना है? मेरी राय में, बहुत कुछ नहीं है। वास्तव में, मर्फी इन तीन छंदों में कभी भी रबाह क्रिया का इस तरह अनुवाद नहीं करता है।

अपनी टिप्पणी में जहां उन्होंने नीतिवचन की पूरी किताब का अनुवाद किया है, यहां उनके अनुवाद हैं। 28-28 जब दुष्ट लोग उठते हैं, तो लोग छिप जाते हैं, परन्तु जब वे नाश हो जाते हैं, तो धर्मी बहुत हो जाते हैं। 29-2 जब धर्मी बहुत होते हैं, तो लोग आनन्द करते हैं, परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करते हैं, तो लोग कराहते हैं।

और 29-16 जितना अधिक दुष्ट, उतना ही अधिक अधर्मी, परन्तु धर्मी अपना पतन देखेंगे। क्या आप देख रहे हैं कि क्या हो रहा है? यह तब और भी अधिक आश्चर्यजनक लगता है जब उन्होंने अपनी व्याख्यात्मक टिप्पणियों में रबाह को शक्तिशाली बनने का अर्थ बताया। हालाँकि हम उसके कारणों के बारे में निश्चित नहीं हो सकते हैं, मुझे संदेह है कि नए संशोधित मानक संस्करण का अनुवाद उस तर्क को प्रकट कर सकता है जिसने मर्फी के निर्णय को प्रभावित किया है।

फिर, जब मैं अपना हाथ उठाऊंगा तो मैं जिन शब्दों पर प्रकाश डालूंगा, वे शब्द जो क्रिया रबा का अनुवाद करते हैं जब मैं एनआरएसवी से पढ़ता हूँ। जब दुष्ट प्रबल होते हैं, तो लोग छिप जाते हैं, परन्तु जब वे नष्ट हो जाते हैं, तो धर्मी बढ़ जाते हैं। तो यह सामान्य अर्थ है, संख्या में वृद्धि।

परन्तु अब 29-2 आता है जब धर्मी अधिकार में होते हैं, तो लोग आनन्दित होते हैं, परन्तु जब दुष्ट शासन करते हैं, तो लोग कराहते हैं। और फिर 29-16 जब दुष्ट अधिकार में होते हैं, तो अपराध बढ़ते हैं, परन्तु धर्मी अपने पतन को देखते हैं। दो बार, रबा को वृद्धि प्रदान की गई है, और दो बार इसे अधिकार में रखा गया है।

संभवतः, अनुवादकों ने सख्त या सटीक समानता के पारंपरिक प्रतिमान के अपने आवेदन के माध्यम से इस अंतर के लिए एक वारंट देखा। इस परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए, मैं अब इन तीन छंदों में रबाह के उपयोग को देखना चाहता हूँ। मेरे अपने दृष्टिकोण से।

आइए पहले 28-28 में रबाह के उपयोग का अवलोकन करें। यहां क्रिया को उन शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया गया है जो मर्फी और एनआरएसवी दोनों द्वारा वृद्धि की अवधारणा को व्यक्त करते हैं। फिर, हिब्रू अरामी शब्दकोष, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया है, इसे एक ऐसे उदाहरण के रूप में क्यों सूचीबद्ध करता है जहां रबाह का अर्थ बढ़ना और शक्तिशाली बनना है? जब हम मर्फी की व्याख्या के संबंध में प्रश्न पूछते हैं तो उत्तर उपरोक्त के समान ही रहते हैं।

नीतिवचन 28-28 इस निष्कर्ष का समर्थन करने के लिए साक्ष्य के रूप में काम नहीं करता है कि रबाह का अर्थ शक्तिशाली बनना है। लेकिन एक उदाहरण के रूप में, जहां यह अर्थ अन्य साक्ष्यों के आधार पर दिया गया है, विशेष रूप से इसके प्रासंगिक जुड़ाव और निकटवर्ती 29-2 के साथ समग्र समानता, जिस पर अब मैं विचार करता हूँ। 29-2 में समानता का विश्लेषण, शुरू में कम से कम, इस बात की पुष्टि करता प्रतीत होता है कि यहाँ, रबाह का अर्थ शक्तिशाली बनना है।

यहां अंग्रेजी में संबंधित तत्व दिए गए हैं। जब धर्मी लोग बढ़ते हैं, तो शक्तिशाली बन जाते हैं, इसकी तुलना में जब हमें नियम, समानांतर शासन, रबा शासन मिलता है। निस्संदेह, पत्राचार का दूसरा सेट पारंपरिक, धार्मिक और दुष्ट है।

और फिर तीसरा यह है कि लोग आनंदित होंगे या प्रसन्न होंगे, लोगों का विकास होगा। तब ऐसा प्रतीत होता है कि समानताओं के तीन सेटों के बीच पूर्ण समानता है, जो पारंपरिक प्रतिमान के अनुसार, या तो पर्यायवाची या विपरीतार्थी हैं। निश्चित रूप से, ऐसा लगता है कि यह धर्मी और दुष्ट, एंटोनिमस और समान विषय के पारंपरिक युग्म के साथ काम करता है, जो दो अर्थ पंक्तियों के अंत में खुश होना, आनन्दित होना और कराहना, दो एंटोनिमस क्रियाओं का पर्याय है।

सख्त समानता के पारंपरिक प्रतिमान के नियमों को देखते हुए, आधी पंक्तियों के पहले दो शब्दों के लिए, जो समान वाक्यात्मक स्थिति में हैं और स्पष्ट रूप से समानांतर हैं, एक ही बात का मतलब होना स्वाभाविक प्रतीत होना चाहिए। चूँकि शासन करने की क्रिया का अर्थ स्पष्ट रूप से शक्ति से संबंधित है, इसलिए यह निष्कर्ष तर्कसंगत लगता है कि यहाँ क्रिया रबाह का अर्थ कुछ

इसी तरह का होना चाहिए, अर्थात् शक्तिशाली बनना। क्या आप तर्क की वृत्ताकारता देख सकते हैं? हालाँकि, मेरी राय में, कविता की अलग-अलग व्याख्या के लिए दो कारण हैं।

यह कविता कई मायनों में असामान्य है और संदर्भ का इसके अर्थ पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सबसे पहले मैं एक संक्षिप्त विवरण के साथ अपना स्वयं का अनुवाद प्रदान करूँगा। फिर हम श्लोक के संदर्भ को देखेंगे, और अंत में, मैं समझाऊँगा कि व्याख्या के लिए इन मामलों का क्या परिणाम होता है।

धैर्य रखने के लिए अनुरोध। तो यहाँ 29.2 का मेरा अनुवाद है। जब धर्मी लोग बढ़ते हैं, तो लोग आनन्दित होते हैं, परन्तु जब कोई दुष्ट प्रभुता करता है, तो लोग कराहते हैं। मैं समानता के अपने विश्लेषण में एक-आधी पंक्ति के तत्वों को दूसरी पंक्ति के संगत कथनों के साथ संरेखित करने की सामान्य प्रक्रिया को छोड़ दूँगा।

क्योंकि यह आवश्यक नहीं है, चूँकि मेरा अनुवाद अधिक शाब्दिक है। लेकिन फिर भी, मेरा मानना है कि यह न केवल अधिक शाब्दिक है, बल्कि अर्थ में भी अधिक समृद्ध है। सबसे पहले, मैंने क्रिया रबाह को शासन करने के लिए संबंधित क्रिया के सटीक एंटीनिम के रूप में अनुवाद करने का विरोध किया है, और मैंने संख्या में वृद्धि के लिए इसके सामान्य अर्थ को बरकरार रखा है।

मैं कुछ ही क्षणों में इसका बचाव कर दूँगा। दूसरा, दूसरी आधी पंक्ति में लोगों के लिए शब्द निर्धारित होता है, लोग। अधिकांश दुभाषिए इस पर ध्यान नहीं देते।

जबकि यह अनिश्चित है, दूसरी छमाही पंक्ति में, एक लोग। मैं एक क्षण में इसका महत्व प्रदर्शित करूँगा। तीसरा, संबंधित 28:12, 28:28, और 29:16 के साथ-साथ 11:10 के विपरीत, जिस पर हम थोड़ी देर बाद आएँगे, यहां दुष्टों के लिए शब्द एकवचन है।

इसलिए अनुवाद मेरे अनुवाद में इसे स्पष्ट करता है, दुष्ट आदमी। वैसे, यह अंतर कविता की मेरी समझ के लिए महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम एक क्षण में देखेंगे। और मैं बस इस पर प्रकाश डाल रहा हूँ।

तो, मैं जो कर रहा हूँ वह यह है कि मैं बहुत शाब्दिक और बहुत सटीक हूँ। मैं अंग्रेजी अनुवाद में केवल वही दोहराता हूँ जो हिब्रू वास्तव में कहता है, न कि वह जो मैं सोचता हूँ कि वह कहता है, जो कि बाकी सभी लोग करते हैं। चौथा, हिब्रू क्रिया आनन्दित करने के दो अलग-अलग अर्थ हैं।

इसका मतलब या तो बहुत खुशी महसूस करना हो सकता है, या इसका मतलब बहुत खुशी के संकेत दिखाना हो सकता है। और यह भेद महत्वपूर्ण है। एक विपरीत सटीक समानता के रूप में कविता के वर्गीकरण के प्रकाश में, अतीत में व्याख्याकारों ने 29.2 में क्रिया को दूसरा अर्थ बताने की प्रवृत्ति की है, अर्थात्, बड़ी खुशी के संकेत दिखाना, क्योंकि यह कराहने, दुखी महसूस करने के साथ एक करीबी विरोधाभास प्रदान करता है।

स्पष्ट रूप से सुनाई देने योग्य, मुझे कहना चाहिए, दुखी महसूस करने की, कराहने की अभिव्यक्ति। स्पष्ट रूप से बड़े संकट या अप्रसन्नता का श्रव्य संकेत। हालाँकि, समाज में गुणी लोगों की बढ़ती संख्या पर आंतरिक खुशी और संतुष्टि खुले उत्सव की तुलना में अधिक स्वाभाविक प्रतिक्रिया लगती है।

हाँ, मुझे बस देखने दो। मुझे लगता है कि मुझे इसे दोहराने की जरूरत है। हाँ ठीक है।

क्षमा करें, मैं केवल पिछले कुछ वाक्यों को दोहराऊंगा, क्योंकि मुझे लगता है कि मैं यहां कुछ चीजों से चूक गया हूँ। तो मैं फिर से कहना चाहूँगा, चौथा, हिब्रू क्रिया आनन्दित होने के दो थोड़े अलग अर्थ हैं। सबसे पहले, अत्यधिक खुशी की आंतरिक अनुभूति, और फिर दूसरी, अत्यधिक खुशी के लक्षण दिखाई देते हैं।

और परंपरागत रूप से विपरीत सख्त समानता के रूप में कविता के वर्गीकरण के प्रकाश में, व्याख्याकारों ने 29.2ए में क्रिया को दूसरा अर्थ देने की प्रवृत्ति की है, अर्थात् बड़ी खुशी के संकेत दिखाना, जश्न मनाना। चूंकि यह कराह के साथ एक करीबी विश्लेषण प्रदान करता है, जो स्पष्ट रूप से उदासी की भावना का एक बाहरी संकेत भी है। हालाँकि, समाज में गुणी लोगों की बढ़ती संख्या पर आंतरिक खुशी और संतुष्टि खुले उत्सव की तुलना में अधिक स्वाभाविक प्रतिक्रिया लगती है।

ये टिप्पणियाँ मेरे अनुवाद में परिलक्षित चार विकल्पों की व्याख्या करती हैं। हालाँकि, इससे पहले कि हम 29:2 की व्याख्या के लिए इन निर्णयों के परिणामों पर विचार करें, अब हमें इस श्लोक के प्रासंगिक लिंक को और अधिक बारीकी से देखने की जरूरत है। इसलिए मैं सबसे पहले नीतिवचन 28:12, नीतिवचन 28:28 के संदर्भ को देखने जा रहा हूँ, और फिर हम नीतिवचन 29:2 के संदर्भ पर भी बाद में गौर करेंगे, लेकिन यहां ध्यान दें कि दो समान कथन मेरे विश्लेषण में पिछला अध्याय 29:2 के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है। लेकिन सबसे पहले, आइए 29:2 को ही देखें।

मर्फी ने बताया कि नीतिवचन 28 में कुछ नया शुरू होता है, जो अन्य बातों के अलावा, पिछले अध्यायों की तुलना में जिसे वह एंटीथेटिकल समानताएं कहता है, उसकी उच्च आवृत्ति में बदलाव से संकेत मिलता है। मीनहोल्ड ने इसी प्रकार अध्याय 29 के अंत तक 28.1 के लिए मुख्य छंदों के आधार पर एक चार गुना संरचना की पेशकश की, अर्थात् 28.1, 28.12, 28.28, और फिर 29.16 और 27 भी। माल्को ने न्यायपूर्ण और दुष्ट गठन के बारे में 21.8 और 29.27 के साथ ऐसी संरचना भी देखी। उन्होंने एक संपूर्ण बड़े वर्ग के इर्द-गिर्द एक ढाँचा तैयार किया है, जिसे उन्होंने सही तरीके से शासन करने के लिए एक संप्रभु की जिम्मेदारी कहा है, जिसे संरचनात्मक रूप से चिह्नित किया गया है, उन्होंने तर्क दिया, 28.12, 28.28, 29.2 और 29.16, हमारे चार छंद जिन्हें हम हमेशा से देख रहे हैं।

अब यहां हमारी चर्चा के लिए महत्वपूर्ण यह है कि दोनों प्रस्तावों में बार-बार दोहराए गए संस्करण संपादकीय भूमिका निभाते हैं, और मैं इससे सहमत हूँ। व्हायब्रे अपनी टिप्पणी में यह कहने में सही हो सकते हैं कि नीतिवचन 28 और 29 में कोई उद्धरण, व्यापक संरचना नहीं है।

लेकिन इस बात से इनकार करना मुश्किल लगता है कि इन अध्यायों में कम से कम कुछ संरचना है।

नीतिवचन 28 के संबंध में, कोई भी 28 छंदों में जिस तरह से कुछ विचारों को अंदर और बाहर बुनता है, उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। मर्फी की सारांश व्याख्या के अनुसार, अलोंजो शॉकेल ने सुझाव दिया कि राजनीति नीतिवचन 28 का एकीकृत विषय है। मैं उद्धृत करता हूं, छंदों का अधिकांश भाग सत्ता के सही प्रयोग या दुरुपयोग, चाहे वह राजनीतिक हो या आर्थिक, से संबंधित है।

यह ऐसा है जैसे निर्देश स्पष्ट रूप से समाज में सत्ता और प्रभाव के पदों के लिए नियुक्त युवाओं को निर्देशित किए गए थे। अंत उद्धरण. माल्को और भी आगे बढ़ गया।

उनके विचार में नीतिवचन 28 से 29 एक जटिल रूप से व्यवस्थित संग्रह है जो भविष्य के राजाओं के लिए एक मैनुअल के रूप में काम करता है। अंत उद्धरण. इसी तरह, व्हाईब्रे ने इस बात पर जोर दिया कि नीतिवचन 28 से 29 में शासकों से संबंधित नीतिवचन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नीतिवचन 28.2, 15, 16, 29.4, 12, 14, और 26, उनके विचारों में, मैं उद्धृत करता हूं, न केवल विनम्र और प्रशंसात्मक हैं, बल्कि सभी कुछ हद तक आलोचनात्मक हैं और बुरे और क्रूर शासकों के अस्तित्व के बारे में जागरूकता दिखाते हैं। अंत उद्धरण. अब, इन छंदों में शासकों के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया गया है।

श्लोक 2, श्लोक 15, श्लोक 16, श्लोक 29, श्लोक 4, श्लोक 29:12, और 29:14। गौरतलब है कि नीतिवचन 29 में राजा के लिए शब्द दो बार आता है। इनमें से पहला 29:2 से केवल एक छंद से अलग किया गया है, जबकि इनमें से दूसरा 29:16 से भी केवल एक छंद से अलग किया गया है। इससे भी अधिक, दोनों अवसरों पर मध्यवर्ती श्लोक, जो कि 29:3 और 29:15 है, बच्चों की शिक्षा से संबंधित है, इस प्रकार बुरी सरकार के खतरों के बारे में संलग्न सामग्रियों के चारों ओर एक त्रैमासिक, चिस्टिक फ्रेम तैयार करता है।

फिर, प्रासंगिक लिंक और विषयगत संबंध इतने मजबूत हैं कि मैं मार्को से सहमत हूं। नीतिवचन 29:2 की व्याख्या छंदों की एक श्रृंखला के भाग के रूप में की जा सकती है जिसका उपयोग समाज में भविष्य के नेताओं, शायद भविष्य के शासक, राजा की शिक्षा के संदर्भ में भी किया जा सकता था। 29:2 को भावी शासक की सरकार की तैयारी के संदर्भ में व्याख्या करने की आवश्यकता है।

इस व्यक्ति को देश के नागरिकों में संतुष्टि लाने के लिए पूरी आबादी में सद्गुणों के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह एक अधिक सामान्य सुझाव के विपरीत है कि यदि किसी देश के शासक दुष्ट हैं, तो देश के लोग कराह उठेंगे। एक अत्यधिक आरोपित शब्द जो हिब्रू बाइबिल में हमेशा गहरे असंतोष से जुड़ा होता है और अक्सर गंभीर दैवीय दंड की ओर ले जाता है या उसके परिणामस्वरूप होता है।

निर्गमन में, यशायाह, यिर्मयाह, विलाप, ईजेकील और जोएल, और यहां कई संदर्भ हैं। नतीजतन, इस कविता की दूसरी आधी पंक्ति भविष्य के शासक को अपने शासनकाल के दौरान अन्याय से दूर रहने की सख्त चेतावनी है, क्योंकि यह निहित है, उसके लोगों की कराह न केवल सार्वजनिक असंतोष बल्कि दैवीय निर्णय के माध्यम से राष्ट्रीय तबाही को जन्म देगी। निम्नलिखित श्लोक, अध्याय 9, श्लोक 3 से 16, अच्छी और बुरी सरकार के मामले का अध्ययन प्रदान करते हैं।

अगले कुछ मिनटों में, मैं नीतिवचन अध्याय 29, श्लोक 16 में रबाह के उपयोग की जांच करूंगा। यह अब क्रिया रबाह के लिए शक्तिशाली बनने के अर्थ के साथ सूचीबद्ध अंतिम संदर्भ है। प्रारंभिक सर्वेक्षण संबंधित स्लॉट में दुष्ट और धर्मी की पारंपरिक जोड़ी का पता लगाएगा।

लेकिन इसके अलावा, ऐसी कोई समानता नहीं दिखती जो इस लेबल के लायक हो। फिर भी, ऐसी समानता देखी गई है। यहाँ मर्फी का संक्षिप्त विश्लेषण है।

मैं उद्धृत करता हूँ। श्लोक 28:12, 28:28, और 29:2 को याद करता है। न्यायी और दुष्ट की तुलना की जाती है, और किसी भी समूह की वृद्धि अधिक शक्ति और प्रभाव की ओर ले जाती है। यहां अधर्म में वृद्धि उलट जाएगी।

यह नहीं बताया गया है कि कैसे, लेकिन दुष्टों के पतन की गवाही से न्यायी की जीत का संकेत मिलता है। अंत उद्धरण. मर्फी की प्रदर्शनी के निम्नलिखित घटक उल्लेखनीय हैं।

सबसे पहले, संदर्भ की अपील करें। यह कविता अन्य छंदों की याद दिलाती है, विशेष रूप से 29.2। दूसरा, न्यायी और दुष्ट की पारंपरिक जोड़ी के बीच विरोधाभास की श्रेणी, उनके लिए, समानता का एक सिफर है। तीसरा, यह विचार कि किसी तरह न्यायपूर्ण या दुष्ट लोगों की वृद्धि से किसी भी समूह के लिए अधिक शक्ति और प्रभाव उत्पन्न होता है।

हालाँकि, 29:16 में तथाकथित समानता के नज़दीकी निरीक्षण से पता चलता है कि जो तत्व किसी भी तरह से मेल खाते हैं, उनका मिलना मुश्किल है। समानता के निर्माण के लिए यहां एक संभावित परिदृश्य है। और मैं चाहता हूँ कि आप बस इसका अनुसरण करें और देखें कि क्या वे किसी भी तरह से जुड़ते हैं।

जब कोई बढ़ता है या शक्तिशाली हो जाता है, तो उनके पतन के विपरीत, दुष्ट और धर्मी, अपराध बढ़ते हैं, लोग देखेंगे। यह विश्लेषण धर्मी और दुष्ट के बीच एक विरोधाभास को दर्शाता है, और शायद क्रिया रबा के बीच एक विरोध को भी दर्शाता है, चाहे वह वृद्धि हो या शक्तिशाली हो, और पतन हो या अचानक पतन हो। हालाँकि, अभिव्यक्तियों का तीसरा सेट केवल उस शब्द के व्यापक अर्थ में मेल खाता है।

पारंपरिक सख्त समानता के सामान्य अनुप्रयोग के अनुसार, कोई वास्तव में इस विचार का अर्थ लगा सकता है कि लोगों के एक निश्चित समूह के पतन के विपरीत उनका सत्ता में आरोहण था। हालाँकि, मुझे ऐसा लगता है कि दो अभिव्यक्तियों के बीच विरोधाभास के अस्तित्व से इस प्रकार का निष्कर्ष आवश्यक निष्कर्ष नहीं है। क्या सत्ता की हानि वास्तव में लोगों के एक निश्चित समूह के पतन का आवश्यक और सबसे प्रमुख परिणाम है? और यदि ऐसा था भी, तो विचार को व्यक्त

करने के लिए पास में एक बिल्कुल उपयुक्त हिब्रू शब्द था, अर्थात् उठने की क्रिया, जैसा कि अभिव्यक्ति में है, जब 28:12 और 28:28 में दृष्ट उठते हैं।

इसलिए, लेखक चाहता तो ऐसा कह सकता था। यह अभिव्यक्ति आसानी से उपलब्ध है, और यह विशेष रूप से उपयुक्त होती क्योंकि यह एक ऐसे विचार को व्यक्त करती है जो स्पष्ट रूप से स्वायत्त है। यह दुष्टों के उत्थान का वर्णन करता है, जबकि यहाँ दूसरी अभिव्यक्ति अचानक पतन का वर्णन करती है।

इस अभिव्यक्ति ने शक्तिशाली बनने का विचार भी व्यक्त किया होगा, जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी। हालाँकि, इस अभिव्यक्ति का प्रयोग वर्तमान संदर्भ में नहीं किया गया था। इसके स्थान पर जिस क्रिया का उपयोग किया गया वह क्रिया रबाह थी, जो संख्या में वृद्धि के लिए अपने सामान्य अर्थ के साथ उसी आधी पंक्ति में फिर से प्रकट होती है।

रबाह के लिए अर्थ शक्तिशाली होने का समर्थन नहीं करता है। आइए अब हम नीतिवचन 28:28 की ओर वापस जाएँ, वह श्लोक जिसने हमें रबाह के अर्थ की खोज में आरंभ किया था। हमने दिखाया है, मुझे आशा है कि मैंने दिखाया है, कि एक बार जब सख्त समानता के पारंपरिक प्रतिमान की प्रधानता पर सवाल उठाया जाता है, तो वास्तव में इस कविता में, या किसी भी अन्य छंद में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके लिए अर्थ को शक्तिशाली बनाना आवश्यक हो।

रबाह के लिए शक्तिशाली होने का अर्थ, जैसा कि समकालीन हिब्रू शब्दकोशों में प्रस्तुत किया गया है, प्रचुर मात्रा में होना चाहिए। मेरा मानना है कि हिब्रू कविता के विस्तृत कल्पनाशील विश्लेषण के लिए और सामान्य तौर पर कोशलेखन के लिए भी एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष इस उदाहरण से निकाला जा सकता है, जिसे हमने अभी देखा है। ऐसे कई स्थान हैं जहाँ हिब्रू शब्दों के अर्थ सख्त अर्थों में समानता के आधार पर रखे गए हैं।

इनमें से कई पहचानें वर्तमान हिब्रू-अंग्रेज़ी, हिब्रू-जर्मन, हिब्रू-स्पेनिश, हिब्रू-फ्रेंच शब्दकोशों आदि में प्रवेश कर चुकी हैं। हालाँकि, मैंने अभी जो तर्क दिया है उसकी वर्तमान जांच के नतीजे बताते हैं कि सख्त समानता की धारणा के आधार पर शब्दावली संबंधी पहचान संभावित रूप से कमजोर जमीन पर खड़ी है। इस संभावना को ध्यान में रखते हुए उन्हें दोबारा जाँचने की ज़रूरत है कि इस तरह से पहचाने गए शब्द उन शब्दों के सटीक पर्यायवाची या विलोम नहीं हैं जिनके साथ वे समानांतर हैं।

अब मैं नीतिवचन 28:12 और नीतिवचन 28:28 के बीच समानता और अंतर के बारे में कुछ और कहना चाहता हूँ। कई लोगों ने पहले कहा है, ठीक है, दोनों में कमोबेश एक ही बात बार-बार कही जा रही है। लेकिन नीतिवचन में तीन अन्य छंद हैं, अर्थात् अध्याय 11:10 और जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं, 29:2 और 29:16, जो इतने समान हैं कि मुझे लगता है कि वे न केवल समानताओं पर बल्कि आगे भी प्रकाश डालते हैं। 28:12 और 28:28 के बीच अंतर. पुराने नियम के विद्वान डैनियल स्नेल ने वास्तव में, 11:10 और 29:2 को 21:11, 21:12 और 28:28 के साथ सूचीबद्ध किया, जिसे उन्होंने दो बार नीतिवचन कहा। और वह कहते हैं, यह समूह दोनों खंडों में, इन, से पहले मौखिक संज्ञाओं के उपयोग को साझा करता है।

नीतिवचन 29:16 डैनियल स्नेल की दो बार कही गई नीतिवचनों की सूची में भी आता है, हालाँकि, यहाँ दोहरी क्रिया के उपयोग की श्रेणी के अंतर्गत आता है। और एक नज़र में, अगर हम उन्हें एक साथ देखें, तो पाँच छंद वास्तव में समानताएँ प्रकट करते हैं जो डैनियल स्नेल के विश्लेषण या विवरण से भी अधिक करीब हैं। आइए मैं आपको छंद पढ़कर सुनाऊँ।

जब धर्मी समृद्ध होते हैं, तो नगर आनन्दित होता है। तो, यह 11:10 है। जब धर्मी समृद्ध होते हैं, तो नगर आनन्दित होता है। जब दुष्ट नाश होते हैं, तो बड़ा आनन्द होता है।

28:12. जब धर्मी आनन्दित होते हैं, तो बड़ी महिमा होती है। परन्तु जब दुष्ट लोग उठते हैं, तो लोग छिप जाते हैं। 28:28. जब दुष्ट लोग उठते हैं, तो लोग छिप जाते हैं।

परन्तु जब वे नाश होते हैं, तो धर्मी बढ़ते हैं। 29:2. जब धर्मी लोग बढ़ेंगे, तब प्रजा प्रसन्न होगी। परन्तु जब दुष्ट राज्य करेंगे, तो लोग कराह उठेंगे।

29:16. जब दुष्ट बढ़ते हैं, तो अपराध बढ़ता है। परन्तु धर्मी लोग अपने पतन को देखेंगे। अब, मैं निश्चित रूप से जानता हूँ, जब आप इसे इस रूप में पढ़ते हुए सुनते हैं, तो वे समान ही लगते हैं।

लेकिन मैं अब अगले कुछ मिनटों में यह सुझाव देना चाहता हूँ कि उनमें से प्रत्येक के बीच सूक्ष्म बारीकियाँ और अंतर बेहद महत्वपूर्ण हैं। और मैं तर्क दूंगा कि जब हम इन मतभेदों पर ध्यान देते हैं, तो सरकार और समाज में शासन के अभ्यास की एक बेहद जटिल और सूक्ष्म तस्वीर उभरती है। यह न केवल अविश्वसनीय रूप से बुद्धिमान, सामाजिक रूप से बुद्धिमान और राजनीतिक रूप से बुद्धिमान है, बल्कि मैं तो यहां तक कहूंगा कि यह पश्चिम और दुनिया में अन्य जगहों पर आधुनिक सरकार के लिए वास्तव में शिक्षाप्रद हो सकता है।

अपने विश्लेषण में, मैंने अब इस बारे में कई अलग-अलग टिप्पणियाँ की हैं। और मुझे लगता है कि मैं इनमें से अधिकांश को छोड़ दूंगा, लेकिन इस विस्तृत विश्लेषण का नतीजा क्या होगा, यह बताने के लिए मैं तुरंत अपने निष्कर्ष पर पहुंचूंगा। मैं इसे इन श्लोकों में दुष्ट लोगों के भाग्य के वर्णन से उठाता हूँ।

दुष्ट लोगों के भाग्य के इन श्लोकों में से चार वर्णन सकारात्मक हैं। कब उभर रहा है, कब शासन कर रहा है, कब उठ रहा है, और कब बढ़ रहा है। फिर, दुष्टों के लिए ये चारों विकास एक जैसे प्रतीत होते हैं।

निश्चित रूप से, हम यह मान सकते हैं कि उभरने के दो संदर्भ एक जैसे हैं, जो समाज में बढ़ते महत्व, बढ़ते प्रभाव और संभवतः समाज की शक्ति संरचनाओं में प्रभुत्व का जिक्र करते हैं। यह निर्णय लेने जैसा लग सकता है, लेकिन फिर भी, अभिव्यक्तियाँ आवश्यक रूप से समान नहीं हैं। सबसे पहले, जबकि उभरने में समाज की सत्ता संरचनाओं की सीढ़ी पर चढ़ना शामिल हो सकता है, यह जरूरी नहीं है।

और दूसरा, सत्ता संरचना का हिस्सा होना बिल्कुल भी शासन करने के समान नहीं है, जिसका सामान्य अर्थ पूर्ण शक्ति होता है। वृद्धि के संदर्भ को अक्सर यह कहने के एक और तरीके के रूप में देखा गया है कि दुष्ट शक्तिशाली हो जाएंगे, लेकिन निश्चित रूप से, मैंने उस धारणा के खिलाफ तर्क दिया है, मुझे आशा है कि यह प्रेरक है। समाज में लोगों के एक निश्चित समूह की संख्या में एक महत्वपूर्ण और निरंतर वृद्धि निश्चित रूप से अंततः शक्ति संतुलन को उनके पक्ष में स्थानांतरित कर देगी क्योंकि समाज में व्यापक रूप से उनका प्रभाव अधिक होगा।

बहरहाल, इस अभिव्यक्ति और अन्य अभिव्यक्ति के बीच सूक्ष्म बारीकियाँ हैं जिन्हें कम नहीं किया जाना चाहिए। इस संबंध में, मैं क्लिफोर्ड की 2916 की व्याख्या पर वापस आता हूँ, जो संख्या में वृद्धि की धारणा को अन्य अर्थों में समाहित करने के बजाय कायम रखती है, और यह शिक्षाप्रद है। मैं क्लिफोर्ड से उद्धृत करता हूँ, जब एक दुष्ट गुट असंख्य हो जाता है, तो वह दूसरों के खिलाफ अपराधों में वृद्धि के माध्यम से अपने विनाश के बीज बोता है।

दुष्ट वर्ग की वृद्धि ही उसके पतन का कारण बनेगी, क्योंकि अपराध सामाजिक अशांति के साथ-साथ दैवीय प्रतिशोध भी लाते हैं। यह मुझे दुष्टों के संबंधित भाग्य के प्रति समाज में विभिन्न प्रतिक्रियाओं से अवगत कराता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिक्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं, जो लोगों के विशिष्ट समूहों को संदर्भित करने वाली संज्ञाओं द्वारा व्यक्त की जाती हैं और वे जो करते हैं उसे व्यक्त करने वाली क्रियाओं द्वारा व्यक्त की जाती हैं।

दुष्टों की मौत के जवाब में, श्लोक 1110ए में वर्णित शहर के नागरिकों के बीच जश्न मनाया जाता है। दुष्ट लोगों की बढ़ती संख्या के जवाब में, 2916 में अपराध बढ़ गया है। लोगों के अन्य समूह भी पहले इसी तरह प्रतिक्रिया करते प्रतीत होते हैं, खासकर जब हम सिर्फ अंग्रेजी अनुवाद पर विचार करते हैं।

स्पष्ट रूप से, नीतिवचन 28 श्लोक 12 और 28 श्लोक 28 में लोग इन दोनों अवसरों में से किसी भी अवसर पर समाज के किसी विशेष समूह पर प्रतिबंध के बिना सामान्य आबादी का उल्लेख करते हैं। 29:2 में लोग शब्द भी पहली नज़र में अर्थ में समान लगता है। फिर भी, मेरा मानना है और तर्क है कि ऐसा नहीं है, क्योंकि यहां सामान्य आबादी को एक राजा द्वारा शासित राज्य के नागरिकों के रूप में संदर्भित किया गया है।

अंत में, मेरी राय में, धर्म का तात्पर्य सामान्य रूप से जनसंख्या से नहीं है, बल्कि समाज के भीतर विशिष्ट प्रकार के लोगों से है, अर्थात् चरित्र और निष्ठा वाले लोग जो सक्रिय रूप से समाज की भलाई के लिए प्रयास करते हैं। इसलिए, इन छंदों में प्रयुक्त क्रियाओं के बीच समानताएं और अंतर हैं। दुष्टों के सकारात्मक भाग्य के प्रति दो प्रतिक्रियाएँ लगभग समानार्थक शब्द हैं, अर्थात् छिपना और छिपना।

हालाँकि, लोगों की प्रतिक्रिया काफी अलग है। वे कराह उठेंगे। दुष्टों के नकारात्मक भाग्य की प्रतिक्रियाओं के संबंध में, फिर से महत्वपूर्ण मतभेद हैं।

एक श्लोक में लोकप्रिय आनंद है, दूसरे में धर्मी लोगों की संख्या बढ़ रही है, और धर्मी लोगों के लिए यह देखने का संतोष प्राप्त करने का अवसर है कि दुष्ट अंततः दूसरे में कैसे नष्ट हो जाएंगे।

इसमें अधिक विस्तृत टिप्पणियाँ, छंदों का मेरा अंतिम सेट, जिसका मैंने अपनी पुस्तक में विश्लेषण किया है, इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि लौकिक कविता में समान अभिव्यक्तियों के बीच सूक्ष्म अंतर मायने रखता है। इन्हें गंभीरता से लेने से विशेष रूप से इन छंदों और सामान्य रूप से कविता के बारे में हमारी समझ समृद्ध हो सकती है।

यह हमें हमारे व्याख्यान के समापन पर लाता है।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या 16, नीतिवचन अध्याय 28 और 29 है।